# एक बूँद

अंजु चौधरी

मैं बूंद नहीं एक सागर हूं
अमृत से भरी एक गागर हूं
मुझमें छिपी नदिया की जलधार
गोदी में मेरी खेलते जीव-जंतु अपार
मुझसे ही पाते वन नव जीवन
मुझसे ही बनते वर्षा वाले घन
मैं ही हरी-भरी धरा का पोषण
प्राणी की क्षुधा तृप्ति का मैं ही साधन
मुझ बिन रेगिस्तान ने पाँव पसारे हैं

मुझ बिन सूने ताल-तलैया उपवन बेचारे हैं
मुझसे जल पाते कूप बावड़ी और झरने
चीख उठता कण-कण लगती जब मैं मरने
बिन मेरे वसुंधरा हो जाती ऊसर-बंजर
जल की अतुल राशि में मेरा ही मंजर
चातक की चाहत चकवी की पुकार हूं मैं
सीप में बंद मोती का आधार हूं मैं
मैं ही पर्वत से गिरते झरनों का श्रृंगार
मैं ही पृथ्वी की नीलिमा का आधार

मेरा प्रबंधन देता खेतों को हरियाली
प्रचंड रूप मेरा छीन लेता खुशहाली
सूर्य-किरण ने मेरा रूप संवारा है
चांदनी ने ओस रूप मेरा निहारा है
मैं अपना सब कुछ बिना शर्त देती हूं
बदले में तुमसे तुम्हारा कुछ ना लेती हूं
मेरी काया जब-जब होगी मैली
काया तुम्हारी भी तब-तब होगी रोगी
मुझे यदि बचा पाओगे, कल सुनहरा तभी पाओगे

संपर्क करें:
**अंजु चौधरी**
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान
रुड़की।